वैभव ल

धनलक्ष्मी माँ

सुख, शांति, वैभव और लक्ष्मी प्राप्ति

अद्‌भुत चमत्कारी प्राचीन व्रत



प्रकाशक:

साहित्य संगम • बावासीदी, गापीपुरा, सूरत



हे धन (वैभव) लक्ष्मी माँ। आपने जैसे शीला की मनोकामना पूर्ण
की वैसे सब की मनोकामना पूरी करना और सबका कल्याण करना।

. ५–०० 'साहित्य संगम–सूरत' का 'वैभवलक्ष्मी व्रत'

अब जर्मन भाषा में भी

'साहित्य संगम' से प्रकाशित व्रतों की किताबें शुद्ध और शास्त्रीय होती हैं । उसमे कैसे करना चाहिए उसकी पूरी शास्त्रीय विधि दी जाती है । इसलिए 'साहित्य म–सूरत' का 'वैभवलक्ष्मी व्रत' हिन्दी के अतिरिक्त गुजराती, मराठी, तमिल, गु, कन्नड, मलयालम, उडिया, बंगाली और सिंधी के अतिरिक्त युरोप–अमरिका लोगों के लिए अंग्रेजी में और अब आर्यसंस्कृति के चाहक जर्मनों के लिए जर्मन भाषा में भी प्रकाशित करनी पडी हैं ।

पूरे साल की ख–शांति

हर साल 'साहित्य संगम–सूरत' का भारत सरकार में रजीस्टर्ड कॉपीराईट नं. एल. ११६३९/८८ वाला 'वैभवलक्ष्मी व्रत' करें और श्रीयंत्र की छबिवाला 'वैभवलक्ष्मी पंचांग (केलेन्डर)' घर में रखें। माँ वैभवलक्ष्मी का आर्शीवाद सदा आप के घर पर रहेगा।

द्ध, सच्चा और शास्त्रीय विधि से करने का प्राचीन, शीघ्र फलदायी व्रत, जिसका फल सच्चे भाव से करने पर अवश्य मिलता हैं ।

वैभवलक्ष्मी व्रत

करने की शास्त्रीय विधि, व्रत पूरा होने पर उनका उद्यापन करने शास्त्रीय विधि, व्रत की कथा, व्रत करते वक्त पालने के नियम, न फल दे तो उनकी वजह, लक्ष्मी स्तवन, श्री लक्ष्मी महिमा, वैभवलक्ष्मी व्रत के सच्चे बने हुए किस्से, श्रीयंत्र, श्री लक्ष्मीमाता आठ स्वरूप की छबियाँ, आरती, स्तुति वगैरह का एक मात्र र्ण, सच्चा, प्राचीन और शीघ्र फलदायी व्रत का पुस्तक ।

ताँबे पर सिद्ध श्रीयंत्र रु. १०० (डाक से रु. १२०)

बे पर सिद्ध श्री कुबेरयंत्र रु. १०० (डाक से रु. १२०)

पुस्तक वाले लिखते है कि सोने के गहने की पूजा की, माना वैभवलक्ष्मी पूरा हो गया । यह बात सरासर गलत है । सिर्फ यही पुस्तक में धनलक्ष्मी न कि वैभवलक्ष्मी की असली छवि भी पहली बार प्रकट की गई है । अगर भाव से यह पुस्तक में दिखाई गई शास्त्रीय विधि अनुसार उनकी उद्यापन विधि की जाय तो यह व्रत का फल अवश्य मिलता है ।

त्य संगम, पंचोली वाडी के सामने, बावासीदी, गोपीपुरा, सूरत–३९५००१
फोन : (०२६१) २४२७८८२ / २४३२५६३

यह व्रत शीघ्र फलदायी है। किन्तु फल न दे तो तीन माह के बाद फिर यह व्रत शुरू करना चाहिये। और जब तक मनवांछित फल न मिले ब तक यह व्रत तीन-तीन महीने पर करते रहना चाहिये। तो कभी श्री स का फल अवश्य मिलता ही है।

व्रत विधि शुरू करने से पहले की विधि

) 'श्री यंत्र' के सामने देख कर 'श्रीयंत्र को प्रणाम।' ऐसा बोलकर यंत्र को प्रणाम करें। (इस पुस्तक में 'श्रीयंत्र' की छवि दी हुई है।)

) बाद में लक्ष्मी जी के नीचे मुताबिक आठ स्वरूप की छवियों को णाम करें। (१) धनलक्ष्मी एवं वैभवलक्ष्मी स्वरूप. (यह पुस्तक में हले ही उन की चतुरंगी छवि दी है।) (२) श्री गजलक्ष्मी मां (३) श्री धिलक्ष्मी मां (८) श्री विजयालक्ष्मी मां (५) श्री ऐश्वर्यलक्ष्मी मां)श्री वीरलक्ष्मी मां (७) श्री धान्यलक्ष्मी मां (८) श्री संतान लक्ष्मी मां।

) बाद में नीचे दिया हुआ 'लक्ष्मी स्तवन' का पाठ करें।

हने की पूजा करते वक्त बोलने का

लक्ष्मी स्तवन

श्लोक

ा रक्ताम्बुजवासिनी विलासिनी चण्डांशु तेजस्विनी।
ा रक्ता रुधिराम्बरा हरिसखी या श्री मनोल्हादिनी।।
ा रत्नाकरमन्थनात्प्रगटिता विष्णोस्वया गेहिनी।
ा मां पातु मनोरमा भगवती लक्ष्मीश्च पद्मावती।।

लक्ष्मी स्तवन का हिन्दी में भावार्थ : जो लाल कमल में हती है, जो अपूर्व कांतिवाली है, जो असह्य तेजवाली है, जो र्ण रूप से लाल है, जिसने रक्तरूप वस्त्र पहने हैं, जो भगवान वष्णु को अति प्रिय है, जो लक्ष्मी मन को आनंद देती है, जो समुद्रमंथन से प्रकट हुई है, जो विष्णु भगवान की पत्नी है, जो कमल से जन्मी है और जो अतिशय पूज्य है, वैसी हे लक्ष्मी वी! आप मेरी रक्षा करें।

श्री गजलक्ष्मी माँ।



हे गज लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हु
वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पू
करें।

श्री अधिलक्ष्मी माँ।



हे अधि लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री विजयालक्ष्मी माँ।



हे विजया लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री ऐश्वर्यलक्ष्मी माँ।



हे ऐश्वर्य लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री वीरलक्ष्मी माँ।



हे वीर लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हु
ैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी
करें।

श्री धान्यलक्ष्मी माँ।



हे धान्य लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री सन्तानलक्ष्मी माँ।



हे सन्तान लक्ष्मी माँ! आप जेसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो ओर सब की मनोकामना पूरी करें।

वैभवलक्ष्मी व्रत करने का नियम

(१) यह व्रत सौभाग्यशाली स्त्रियां करें तो उनको अति उत्तम फल मिलता है। पर घर में यदि सौभाग्यशाली स्त्रियां न हों तो कोई भी स्त्री एवं कुमारिका भी यह व्रत कर सकती है।

(२) स्त्री के बदले पुरूष भी यह व्रत करें तो उसे भी उत्तम फल अवश्य मिलता है।

(३) यह व्रत पूरी श्रद्धा और पवित्र भाव से करना चाहिये। खिन्न होकर या बिना भाव से यह व्रत नहीं करना चाहिये।

(४) यह व्रत शुक्रवार को किया जाता है। व्रत शुरू करते वक्त ११ या २१ शुक्रवार की मन्नत रखनी पड़ती है। और पुस्तक में लिखी शास्त्रीय विधि अनुसार ही व्रत करना चाहिये। मन्नत के शुक्रवार पूरे होने पर विधिपूर्वक और इस पुस्तक में दिखाई गई शास्त्रीय रीति अनुसार उद्यापन विधि करनी चाहिये। यह विधि सरल है। किन्तु शास्त्रीय विधि अनुसार व्रत न करने पर व्रत का जरा भी फल नहीं मिलता है।

(५) एक बार व्रत पूरा करने के पश्चात फिर मन्नत कर सकते है और फिर से व्रत कर सकते हैं।

(६) माता लक्ष्मी देवी के अनेक स्वरूप हैं। उनमें उनका 'धनलक्ष्मी स्वरूप' ही 'वैभवलक्ष्मी' है और माता लक्ष्मी को श्रीयंत्र अति प्रिय है। व्रत करते वक्त पुस्तक में दिये हुए मां लक्ष्मीजी के हर स्वरूप को और 'श्रीयंत्र' को प्रणाम करना चाहिये। तभी व्रत का फल मिलता है। अगर हम इतनी भी [illegible] नहीं कर सकते है तो लक्ष्मीदेवी भी हमारे लिये कुछ करने को तैयार नहीं होंगी। और हम पर माँ की कृपा नहीं होगी।

(७) व्रत के दिन सुबह से ही 'जय मां लक्ष्मी' 'जय मां लक्ष्मी' का रटन मन ही मन करना चाहिये। और मां का पूरे भाव से स्मरण

करना चाहिये।

(८) शुक्रवार के दिन यदि आप प्रवास या यात्रा पर गये हो तो वह शुक्रवार छोड़कर उनके बाद के शुक्रवार को व्रत करना चाहिये। पर व्रत अपने ही घर में करना चाहिये। सब मिला कर जितने शुक्रवार की मन्नत ली हो, उतने शुक्रवार पूरे करने चाहिये।

(९) घर में सोना न हो तो चांदी की चीज पूजा में रखनी चाहिये। अगर वह भी न हो तो रोकड़ रूपया रखना चाहिये।

(१०) व्रत पूरा होने पर कम से कम सात स्त्रियों को या आपकी इच्छा अनुसार जैसे ११, २१, ५१, १०१ स्त्रियों का वैभवलक्ष्मी व्रत की पुस्तक कुमकुम का तिलक करके भेंट के रूप में देनी चाहिये। जितनी ज्यादा पुस्तक आप देंगे उतनी मा लक्ष्मी की ज्यादा कृपा होगी और मां लक्ष्मी जी का यह अद्‌भुत व्रत का ज्यादा प्रचार होगा।

(११) व्रत के शुक्रवार को स्त्री रजस्वला हो या सूतकी हो तो वह शुक्रवार छोड देना चाहिये और बाद के शुक्रवार से व्रत शुरूं करना चाहिये। पर जितने शुक्रवार की मन्नत मानी हो, उतने शुक्रवार पूरे करने चाहिये।

(१२) व्रत की विधि शुरू करते वक्त 'लक्ष्मी स्तवन' का एक बार पाठ करना चाहिये।

(१३) व्रत के दिन हो सके तो उपवास करना चाहिये और शाम को व्रत की विधि करके मा का प्रसाद लेकर शुक्रवार करना चाहिये। अगर न हो सके तो फलाहार या एक बार भोजन कर के शुक्रवार करना चाहिये। अगर व्रतधारी का शरीर बहुत कमजोर हो तो ही दो बार भोजन ले सकते है। सबसे महत्व की बात यही है कि व्रतधारी मां लक्ष्मीजी पर पूरी–पूरी श्रद्धा और भावना रखें। और 'मेरी मनोकामना मां पूरी करेगी ही' ऐसा दृढ़ संकल्प करें।

वैभवलक्ष्मी व्रत की कथा



एक बडा शहर था। इस शहर में, लाखों लोग रहते थे। पहले के जमाने के लोग साथ--साथ रहते थे और एक दूसरे के काम आते थे। पर नये जमाने के लोगों का स्वरूप ही अलग सा है। सब अपने अपने काम में रत रहते हैं। किसी को किसी की परवाह नहीं। घर के सदस्यों को भी एक-दूसरे की परवाह नहीं होती। भजन-कीर्तन, भक्ति-भाव, दया-माया, परोपकार जैसे संस्कार कम हो गये हैं। शहर में बुराइयाँ बढ गई थी। शराब, जुआ, रेस, व्यभिचार, चोरी-डकैती बगैरह बहुत से गुनाह शहर में होते थे।

कहावत है कि ' हजारों निराशा में एक अमर आशा छिपी हुई है। इसी तरह इतनी सारी बुराइयों के बावजूद शहर में कुछ अच्छे लोग भी रहते थे।

ऐसे अच्छे लोगो में शीला और उनके पति की गृहस्थी मानी जाती थी। शीला धार्मिक प्रकृति की और संतोषी थी। उनका पति भी विवेकी और सुशील था।

शीला और उनका पति इमानदारी से जीते थे। वे किसी की बुराई करते न थे और प्रभु भजन में अच्छी तरह समय व्यतीत कर रहे थे। उनकी गृहस्थी आदर्श गृहस्थी थी और शहर के लोग उमकी गृहस्थी की सराहना करते थे।

शीला की गृहस्थी इसी तरह खुशी–खुशी चल रही थी। पर कहा जाता है कि 'कर्म की गति अकल है,' विधाता के लिखे लेख कोई नहीं समझ सकता है। इन्सान का नसीब पल भर में राजा को रंक बना देता है और रंक को राजा। शीला के पति के अगले जन्म के कर्म भोगने के बाकी रह गये होंगे कि वह बुरे लोगों से दोस्ती कर बैठा। वह जल्द से जल्द 'करोड़पति' होने के ख्वाब देखने लगा। इसलिये वह गलत रास्ते पर चढ़ गया और 'करोड़पति' की बजाय 'रोडपति' बन गया। याने रास्ते पर भटकते भिखारी जैसी उसकी हालत हो गई थी।

शहर में शराब, जूआ, रेस, चरस–गाजा वगैरह बदियां फैली हुई थीं। उसमें शीला का पति भी फँस गया। दोस्तों के साथ उसे भी शराब की आदत हो गई। जल्द से जल्द पैसे वाला बनने की लालच मे दोस्तों के साथ रेस जुआ भी खेलने लगा। इस तरह बचाई हुई धनराशि, पत्नी के गहने, सब कुछ रेस–जुए में गंवा दिया था।

इसी तरह एक वक्त ऐसा भी था कि वह सुशील पत्नी शीला के साथ मजे में रहता था और प्रभु भजन में सुख–शांति से वक्त व्यतीत करता था। उसके बजाय घर में दरिद्रता और भूखमरी फैल गई। सुख से खाने की बजाय दो वक्त भोजन के लाले पड गये। और शीला को पति की गालियां खाने का वक्त आया था।

शीला सुशील और संस्कारी स्त्री थी। उसको पति के बर्ताव से बहुत दुःख हुआ। किन्तु वह भगवान पर भरोसा करके बडा दिल रख कर दुःख सहने लगी। कहा जाता है कि 'सुख के पीछे दुःख और दुःख के पीछे सुख' आता ही है। इसलिये दुःख के बाद सुख आयेगा ही, ऐसी श्रद्धा के साथ शीला प्रभु भक्ति मे लीन रहने लगी।

इस तरह शीला असह्य दुःख सहते–सहते प्रभु भक्ति मे वक्त

बिताने लगी। अचानक एक दिन दोपहर को उनके द्वार पर किसी ने दस्तक दी।

शीला सोच में पड़ गई कि मुझ जैसे गरीब के घर इस वक्त कौन आया होगा ?

फिर भी द्वार पर आये हुए अतिथि का आदर करना चाहिये, ऐसे आर्यधर्म के संस्कार वाली शीला ने खडे होकर द्वार खोला।

देखा तो सामने एक मांजी खड़ी थी। वे बड़ी उम्र की लगती थी। किन्तु उनके चेहरे पर अलौकिक तेज निखर रहा था। उनकी आँखों में से मानो अमृत बह रहा था। उनका भव्य चेहरा करूणा और प्यार से छलकता था। उनको देखते ही शीला के मन में अपार शांति छा गई। वैसे शीला इस मांजी को पहचानती न थी। फिर भी उनको देखकर शीला के रोम–रोम मे आनंद छा गया। शीला मांजी को आदर के साथ घर में ले आयी। घर में बिठाने के लिए कुछ भी नहीं था। अतः शीला ने सकुचा कर एक फटी हुई चद्दर पर उनको बिठाया।

मांजी ने कहा: 'क्यों ! क्यों पहचाना नहीं ?

शीला ने सकुचा कर कहा : मां ! आपको देखते ही बहुत खुशी हो रही है। बहुत शांति हो रही है। ऐसा लगता है कि मैं बहुत दिनो से जिसे ढूंढ रही थी वे आप ही है पर मे आपको पहचान नही सकती।

मांजी ने हँस कर कहा : 'क्यों भूल गई ? हर शुक्रवार को लक्ष्मीजी के मंदिर में भजन–कीर्तन होते हैं, तब मैं भी वहां आती हूं। वहाँ हर शुक्रवार को हम मिलते हैं।

पति गलत रास्ते पर चढ गया, तब से शीला बहुत दुःखी हो गई थी और दुःख की मारी वह लक्ष्मीजी के मंदिर में भी नही जाती थी। बाहर के लोगों के साथ नजर मिलाते भी उसे शर्म लगती थी। उसने याददास्ति पर जोर दिया पर यह मांजी याद नहीं आ रहे थे।

तभी मांजी ने कहा, 'तू लक्ष्मीजी, के मंदिर में कितने मधुर भजन गाती थी ! अभी–अभी तू दिखाई नहीं देंती थी, इसलिये मुझे हुआ कि तू क्यों नहीं आती है ? कहीं बीमार तो नहीं हो गई है न ? ऐसा सोच कर मैं तुझे मिलने चली आई हूं।

मांजी के अति प्रेम भरे शब्दों से शीला का हृदय पिघल गया। उसकी आँखों में आंसू आ गये। मांजी के सामने वह बिलख–बिलख कर रोने लगी। यह देख कर मांजी शीला के नजदीक सरके और उसकी सिसकती पीठ पर प्यार भरा हाथ फेर कर सांत्वंना देने लगे।

मांजी ने कहा : बेटी ! सुख और दुःख तो धूप और छाव जैस होते हैं। सुख के पीछे दुःख आता है, तो दुःख के पीछे सुख भी आता है। धैर्य रखो बेटी ! और तुझे क्या परेशानी है? तेरे दुःख की बात मुझे सुना। तेरा मन भी हलका हो जायेगा और तेरे दुःख का कोई उपाय भी मिल जायेगा।

मांजी की बात सुन कर शीला के मन को शांति मिली। उसने मांजी को कहा, 'मां ! मेरी गृहस्थी में भरपूर सुख और खुशियाँ थी। मेरे पति भी सुशील थे। भगवान की कृपा से पैसे की बात में भी हमें संतोष था। हम शांति से गृहस्थी चलाते ईश्वर–भक्ति में अपना वक्त व्यतीत करते थे। यकायक हमारा भाग्य हमसे रूठ गया। मेरे पति को बुरी दोस्ती हो गई। बुरी दोस्ती की वजह से वे शराब, जुआ, रेस, चरस–गांजा वगैरह खराब आदतों के शिकार हो गये और उन्होंने सब कुछ गंवा दिया। और हम रास्ते के भिखारी जैसे बन गये।

यह सुन मांजी ने कहा : सुख के पीछे दुःख और दुःख के पीछे सुख आता ही रहता है। ऐसा भी कहा जाता है कि, 'कर्म की गति न्यारी होती है।' हर इन्सान को अपने कर्म भुगतने ही पड़ते है। इसलिये तू चिंता मत कर। अब तू कर्म भुगत चुकी है। अ

तुम्हारे सुख के दिन अवश्य आयेंगे। तू तो मां लक्ष्मीजी की भक्त है। मां लक्ष्मीजी तो प्रेम और करूणा के अवतार है। वे अपने भक्तों पर हमेशा ममता रखती हैं। इसलिए तू धैर्य रख के **मां लक्ष्मीजी का व्रत** कर। इससे सब कुछ ठीक हो जायेगा।

'मां लक्ष्मीजी का व्रत' करने की बात सुन कर शीला के चेहरे पर चमक आ गई। उसने पूछा : 'मां ! लक्ष्मीजी का व्रत कैसे किया जाता है, वह मुझे समझाइये। मैं यह व्रत अवश्य करूंगी।

मांजी ने कहा, 'बेटी ! मां लक्ष्मीजी का व्रत बहुत सरल है। उसे **'वरदलक्ष्मी व्रत'** या **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** कहा जाता है। यह व्रत करने वाले की सब मनोकामना पूर्ण होती है। वह सुख-संपत्ति और यश प्राप्त करता है।' ऐसा कह कर मांजी **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की विधि कहने लगी।

बेटी ! वैभवलक्ष्मी व्रत वैसे तो सीधा-सादा व्रत है। किन्तु कई लोग यह व्रत गलत तरीके से करते हैं। अतः उसका फल नहीं मिलता। कई लोग कहते हैं कि सोने के गहने की हलदी-कुमकुम से पूजा करो। बस ! व्रत हो गया। पर ऐसा नहीं है। कोई भी व्रत शास्त्रीय विधिपूर्वक करना चाहिये। तभी उसका फल मिलता है। सिर्फ सोने के गहने की पूजा करने से फल मिल जाता हो तो सभी आज लखपति बन गये होते। सच्ची बात यह हैं कि सोने के गहनों का विधि पूजन करना चाहिए। व्रत की उद्यापन विधि भी शास्त्रीय विधि मुताबिक करनी चाहिय। तभी यह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** फल देता है।

यह व्रत शुक्रवार को करना चाहिये। सुबह में स्नान करके स्वच्छ कपड़े पहनो और सारा दिन मन में **'जय मां लक्ष्मी', जय मां लक्ष्मी'** का रटन करते रहो। किसी की चुगली नहीं करनी चाहिये। शाम को पूर्व दिशा में मुँह रख सकें, इसी तरह आसन पर बैठ जाओ।

१८ वैभवलक्ष्मी व्रत

सामने पाटा रख कर उसके ऊपर रूमाल रखो। रूमाल पर चावल का छोटा सा ढेर करो। उस ढेर पर पानी से भरा तांबे का कलश रख कर, कलश पर एक कटोरी रखो। उस कटोरी में एक सोने का गहना रखो। सोने का न हो तो चांदी का भी चलेगा। चांदी का न हों तो नकद रूपया भी चलेगा। बाद में घी का दीपक जला कर धूपसैली सुलगा कर रखो।

मां लक्ष्मीजी के बहुत स्वरूप है, और मां लक्ष्मीजी को 'श्री यंत्र' अति प्रिय है। अतः **'वैभवलक्ष्मी'** के पूजन विधि करते वक्त सौ प्रथम **'श्री यंत्र'** और लक्ष्मीजी के विविध स्वरूपों का सच्चे दिल से दर्शन करो। (इस पुस्तक के अगले पृष्ठों पर 'श्री यंत्र' और **माँ लक्ष्मीजी के विविध स्वरूपों की छबि दी गई है।**) उसके बाद **माँ 'लक्ष्मी स्तवन'** का पाठ करो। बाद में कटोरी में रखे हुए गहने या रूपये को हल्दी–कुमकुम और चावल चढ़ा कर पूजा करो और लाल रंग का फूल चढ़ाओ। शाम को कोई मीठी चीज बना कर उसका प्रसाद रखो। न हो सके तो शक्कर या गुड़ भी चल सकता है। फिर आरती करके ग्यारह बार सच्चे हृदय से **'जय माँ लक्ष्मी'** बोलो। बाद में ग्यारह या इक्कीस शुक्रवार यह व्रत करने का दृढ़ संकल्प माँ के सामने करो और आपकी जो मनोकामना हो वह पूरी करने को माँ लक्ष्मीजी की विनती करो। फिर माँ का प्रसाद बाँट दो। और थोड़ा प्रसाद अपने लिये रखो। अगर आप में शक्ति हो तो सारा दिन उपवास रखो और सिर्फ प्रसाद खा कर शुक्रवार करो। न शक्ति हो तो एक बार शाम को प्रसाद ग्रहण करते समय खाना लो। अगर थोड़ी शक्ति भी न हो तो दो बार भोजन कर सकते हो। बाद में कटोरी में रखा गहना या रूपया ले लो। कलश का पानी तुलसी क्यारे में डाल दो। और चावल पक्षियों को डाल दो। इसी तरह शास्त्रीय विधि अनुसार व्रत करने से उसका फल अवश्य मिलता है। इस व्रत के प्रभाव से सब प्रकार की विपत्ति दूर हो कर आदमी

मालामाल हो जाता है। संतान न हो उसे संतान प्राप्ति होती है। सौभाग्यवती स्त्री का सौभाग्य अखंड रहता है। कुंमारी लड़की को मनभावन पति मिलता है।

शीला यह सुन कर आनंदित हो गई। फिर पूछा : 'माँ ! आपने **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की जो शास्त्रीय विधि बताई है, वैसे मैं अवश्य करूंगी। किन्तु इसकी उद्यापन विधि किस तरह करनी चाहिये ? यह भी कृपा करके सुनाइये।

माँजी ने कहा : ग्यारह या इक्कीस जो मन्नत मानी हो उतने शुक्रवार यह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** पूरी श्रद्धा और भावना से करना चाहिये। व्रत के आखरी शुक्रवार को जो शास्त्रीय विधि अनुसार उद्यापन विधि करनी चाहिये वह मैं तुझे बताती हूँ। आखरी शुक्रवार को खीर या नैवेध रखो। पूजन विधि हर शुक्रवार को करते हैं वैसे ही करनी चाहिये। पूजन विधि के बाद श्रीफल फोड़ो और कम से कम सात कुंवारी या सौभाग्यशाली स्त्रियों को कुमकुम का तिलक करके साहित्य संगम की **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की एक–एक पुस्तक उपहार में देनी चाहिये। और सब को खीर का प्रसाद देना चाहिये। फिर धनलक्ष्मी स्वरूप, वैभवलक्ष्मी स्वरूप, माँ लक्ष्मीजी की छवि को प्रणाम करें। माँ लक्ष्मीजी का यह स्वरूप वैभव देने वाला है। प्रणाम करके मन ही मन भावुकता से माँ की प्रार्थना करते वक्त कहें कि, 'हे माँ धनलक्ष्मी ! हे माँ वैभवलक्ष्मी ! मैंने सच्चे हृदय से आपका **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** पूर्ण किया है। तो हे माँ ! हमारी (जो मनोकामना की हो वह बोलो) मनोकामना पूर्ण करो। हमारा सबका कल्याण करो। जिसे संतान न हो उसे संतान देना। सौभाग्यशाली स्त्री का सौभाग्य अखंड रखना। कंवारी लड़की को मनभावन पति देना। आपका यह चमत्कारी वैभवलक्ष्मी व्रत जो करे उनकी सब विपत्ति दूर करना। सब को सुखी करना। हे माँ ! आपकी महिमा अपरंपार है।

२० वैभवलक्ष्मी व्रत

इस तरह माँ की प्रार्थना करके माँ लक्ष्मीजी का **'धनलक्ष्मी स्वरूप'** को भाव से वंदन करो।

मांजी के पास से **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की शास्त्रीय विधि सुन कर शीला भावविभोर हो उठी। उसे लगा मानो सुख का रास्ता मिल गया है। उसने आँखें बंद करके मन ही मन उसी क्षण संकल्प लिया कि, **हें वैभवलक्ष्मी माँ** ! मैं भी मांजी के कहे मुताबिक श्रद्धा से शास्त्रीय विधि अनुसार **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** इक्कीस शुक्रवार तक करूंगी और व्रत की शास्त्रीय विधि अनुसार उद्यापन विधि करूंगी।

शीला ने संकल्प करके आंखें खोली तो सामने कोई न था वह विस्मित हो गई कि मांजी कहाँ गये ? यह मांजी दूसरा कोई न था...साक्षात् लक्ष्मीजी ही थीं। शीला लक्ष्मीजी की भक्त थी, इसलिये अपने भक्त को रास्ता दिखाने के लिए माँ लक्ष्मीदेवी मांजी का स्वरूप धारण करके शीला के पास आई थी।

दूसरे दिन शुक्रवार था। सवेरे स्नान करके स्वच्छ कपड़े पहन कर शीला मन ही मन श्रद्धा से और पूरे भाव से 'जय मां लक्ष्मी' 'जय मां लक्ष्मी' का मन ही मन रटन करने लगी। सारा दिन किसी की चुगली की नहीं। शाम हुई तब हाथ–प्रांव–मुंह धो कर शीला पूर्व दिशा में मुंह करके बैठी। घर में पहले सोने के बहुत से गहने थे। पर पतिदेव ने गलत रास्ते पर चढ कर सब गहने गिरवी रख दिये थे पर नाक की चुन्नी बच गयी थी। नाक की चुन्नी निकाल कर, उसे धो कर, शीला ने कटोरी में रख दी। सामने पाटे पर रूमाल रख कर मुट्ठी भर चावल का ढेर किया। उस पर तांबे का कलश पानी भर कर रखा। उसके ऊपर चुन्नी वाली कटोरी रखी। फिर मांजी ने कही थी, वैसे शास्त्रीय विधि अनुसार वंदन, स्तवन, पूजा बगैरह किया। और घर में थोड़ी शक्कर थी, वह प्रसाद में रख कर **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** किया।

यह प्रसाद पहले पति को खिलाया। प्रसाद खाते ही पति

स्वभाव में फर्क पड़ गया। उस दिन उसने शीला को मारा नहीं, सताया भी नही। शीला को बहुत आनंद हुआ। उनके मन में **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** के लिये श्रद्धा बढ़ गई।

शीला ने पूर्ण श्रद्धा-भक्ति से इक्कीस शुक्रवार तक **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** किया। इक्कीसवे शुक्रवार को माजी के कहे, मुताबिक उद्यापन विधि कर के सात स्त्रियों को **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की सात पुस्तकें उपहार में दीं। फिर माताजी के **'धनवलक्ष्मी स्वरूप'** की छबि को वंदन करके भाव से मन ही मन प्रार्थना करने लगी : **'हे मां धनलक्ष्मी ! मैंने, आप का 'वैभवलक्ष्मी व्रत' करने की मन्नत मानी थी व‿ व्रत आज पूर्ण किया है। हे माँ ! मेरी हर विपत्ति दूर करो। हमारा सबका कल्याण करो। जिसे संतान न हो, उसे संतान देना। सौभाग्यवती स्त्री का सौभाग्य अखंड रखना। कंवारी लड़की को मन भावन पति देना। आपका यह चमत्कारी वैभवलक्ष्मी व्रत करे, उनकी सब विपत्ति दूर करना। सब को सुखी करना। हे मां ! आपकी महिमा अपार है।** ऐसा बोल कर लक्ष्मीजी के **'धनलक्ष्मी स्वरूप'** की छबि को प्रणाम किया।

इस तरह शास्त्रीय विधिपूर्वक शीला ने श्रद्धा से व्रत किया और तुरन्त ही उसे फल मिला। उसका पति-गलत रास्ते पर चला गया था, वह अच्छा आदमी हो गया और कड़ी मेहनत करके व्यवसाय करने लगा। मां लक्ष्मीजी के **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** के प्रभाव से उसको ज्यादा मुनाफा होने लगा। उसने तुरन्त शीला के गिरवी रखे गहने छुड़ा लिये। घर में धन की बाढ़ सी आ गई। घर में पहले जैसी सुख-शांति छा गई।

'वैभवलक्ष्मी व्रत' का प्रभाव देख कर मोहल्ले की दूसरी स्त्रियाँ भी शास्त्रीय विधिपूर्वक **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करने लगीं।

हे मां धनलक्ष्मी ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुई, उसी तरह आपका व्रत करने वाले सब पर प्रसन्न होना। सबको सुख-शांति देना। जय धनलक्ष्मी मां ! जय वैभवलक्ष्मी मां।

वैभवलक्ष्मी माँ के चमत्कार

१. लॉटरी लगी

नवसारी से एक बहन का पत्र था।

हम बहुत गरीब थे। मेरे पति अपंग और बीमार थे। दो छोटे बच्चे थे। बड़ी लडकी पोस्ट में नौकरी करती थी। उसकी तनख्वा में से घर खर्च चल रहा था। वह पच्चीस साल की हो गई थी इसलिये हम उसकी शादी करने की फिक्र में थे।

संयोग से एक लडका भी मिल गया। लड़की को लड़का पसन्द आ गया और लड़के को लडकी पसंद आ गई। शादी की तिथि पक्की हो गई। पर एक बाधा आई। लड़के की मां ने कहा, 'शादी भले ही सादगी से हो जाये पर आपकी लड़की १०० ग्राम सोने के गहने ले कर आयेगी तो ही यह शादी होगी। वरना मैं संमति नहीं दूंगी।

हमारी स्थिति चिंताजनक हो गई। मानो किनारे पर आयी नौका डूबने लगी। बचत तो थी नहीं ! अब १०० ग्राम सोना कहाँ से निकालें ?

मैं उदास होकर दरवाजे पर खडी थी। तभी बाहर के रास्ते पर से एक मोटर-साईकिल तेजी से गुजर गई। उसकी ऊपर से कोई चीज सरक कर हवा में उडी और नीचे गिर गई। मैं जिज्ञासा से बाहर निकल कर देखने लगी कि क्या गिर गया ? तो वह **वैभवलक्ष्मी व्रत** की किताब थी। मैंने साड़ी से पोंछ कर उसे साफ किया और आंखों पर लगा कर बाहर ही बैठ कर पढने लगी।

पढ़ते–पढ़ते मुझे हुआ कि मैं भी यह वैभवलक्ष्मी व्रत करूं तो मेरी आपत्ति भी टल जाये। लगता है माताजी ने मदद करने के लिये ही यह किताब मेरे तक पहुँचा दी होगी। मेरे मन में अदम्य श्रद्धा जाग गई।

दूसरे दिन शुक्रवार था। मैंने स्नान कर के ग्यारह शुक्रवार करने की मन्नत मान कर संकल्प किया। और किताब में लिखे मुताबिक विधि अनुसार पूरे भाव और श्रद्धा से व्रत करने लगी। शुक्रवार को सारा दिन **'जय मां लक्ष्मी'** का रटन किया। शाम को चावल के ढेर पर तांबे के जल से भरा कलश रख कर ऊपर कटोरी रखी। उसमें मेरे हाथ की सोने की अंगूठी रखी। उस किताब में लिखे अनुसार विधि पूजन करके गुड़ का प्रसाद रखा।

रात–दिन मेरा ध्यान **'धनलक्ष्मी माँ,** की छबि में लगा रहता। मैं रोज उनके दर्शन कर के गिड़गिडाती। पांचवें शुक्रवार को शाम को मैंने **'धनलक्ष्मी मां,** की छबि का दर्शन करके पूजन विधि शुरू की, तभी मेरा पंद्रह साल का लड़का दौड़ता आया। उसने कहा, 'मां ! देख ! हमारी महाराष्ट्र की लॉटरी लगी। पूरे पचास हजारों का इनाम लगा है, मां !

मैं आनंद से उछल पड़ी। मैंने कहा, 'तू जरा ठहर जा। मुझे पूजन कर लेने दे। प्रसाद ग्रहण कर के बात करेंगे। मैंने उमंग से व्रतविधि पूर्ण की और हम सबने अति श्रद्धा से मां का प्रसाद ग्रहण किया ! बाद में हम सब ने लॉटरी का नंबर देखा किया तो उनकी बात सच थी।

माताजी ने मेरी मुसीबत दूर कर दी थी। लॉटरी के पैसे मिलते ही उसमें से मैंने १०० ग्राम सोना ले कर लड़की के लिये गहने बनवाये और लड़की की शादी की। उसे गहने देकर ससुराल भेजी।

इस तरह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** के प्रभाव से धनलक्ष्मी मां ने मेरा

दुःख दूर कर दिया। जय धनलक्ष्मी मां

२. खोये हुए हीरे वापस मिले

मेरे पति हीरे की दलाली करते हैं। हमारी आवक भी अच्छी है। अचानक एक दिन हमारे पर विपत्ति टूट पड़ी। रात्रि को मेरे पति घर आयें। रोज के मुताबिक शर्ट उतार कर कील पर लटका दिया। पेन्ट बदल कर लूंगी पहनी और पेन्ट के खीमे में से हीरे के पैकेट निकालने गये तो नहीं मिले। मैंने कीचन में से देखा कि वे कुछ ढूंढ़ रहे हैं। मैने पूछा कि, क्या ढूंढ़ रहे हो ? कुछ खो गया है ?

'हाँ ! हीरे का पैकेट नहीं मिल रहा। पेन्ट के बायें जेब में रखा था। नहीं मिला तो हम बरबाद हो जायेंगे।

मेरे भी हो शोहवाश उड़ गये। तेजी से गैस बंद करके मैं और वे आने–जाने के रास्ते, अपार्टमेंट की सीढ़िया, रास्ता सब जगह ढूंढने लगे। पर कहीं भी पैकेट दिखाई नहीं दिया।

हम दोनों पति–पत्नी उदास हो कर सोफे पर बैठ गये। बहुत सुख था। अब बहुत दुःख आ गया।

उसी समय मेरे पति के दोस्त अपनी पत्नी के साथ हम से, मिलने आये। मैंने आवकार देकर उनको बिठाया और पानी दिया। हमारे उदास चेहरे देखकर उन्होंने हँस कर पूछा, 'क्या बात है भाई ! मुँह लटकाये क्यों बैठे हो ? लड़ाई–झगड़ा हो गया है क्या ?

मुझे रोना आ गया। मैंने रोते–रोते हीरे का पैकेट खो जाने की बात कही। और वे लोग भी दंग रह गये।

कुछ सोच कर दोस्त की पत्नी रमीला बहन मुझे रसोईघर में ले गई और कहा, भाभी ! आप मेरी एक बात मानोगी ?'

'क्या ?

'आप वैभवलक्ष्मी व्रत' करने की मन्नत मानो। आदमी व्रत में भले ही न मानते हो, पर हम औरतों को व्रत में श्रद्धा रखनी चाहिये।

यह व्रत धनलक्ष्मी माता का है। आप मन्नत रख लो।' और उसने मुझे व्रत की विधि बतायी।

मैंने तुरन्त ही हाथ-पांव धो कर इक्कीस शुक्रवार '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' करने की मन्नत मानी और ५१ 'वैभवलक्ष्मी व्रत' की किताब बाँटने की मन्नत मानी।

सारी रात मैं '**जय मां लक्ष्मी**' का रटन करती रही। सवेरे थोड़ा-थोड़ा उजाला होते ही माताजी की प्रेरणा से हम हीरे का पैकेट ढूंढने निकल पडे। जिस रास्ते से वे स्कूटर पर आये थे वही रास्ते पर मां का रटन करते-करते हम ध्यान से पैकेट ढूढते धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। हीरा बाजार में दाखिल, होते ही एक कोने पर कूड़े में आधा से दबा हुए एक पैकेट पर मेरी नजर गई। मैने पति को दिखाया।

'यही है ! यही है !' मेरे पति ने चिल्लाते हुए तेजी से पैकेट उठा लिया। हीरे की छोटी-छोटी पुड़ी को रबड़ बैड से जकड़ कर एक पैकेट बनाया था, वह पैकेट वैसे का वैसा ही मिल गया।

जब, शुक्रवार आया तब हम दोनों ने व्रत शुरू किया और पूरे भाव से इक्कीस शुक्रवार पूरे किये। उद्यापन विधि में हमने आपके यहां से ५१ '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की पुस्तक लेकर ५१ स्त्रियों को उपहार में दी।

३. चोरी हो गये गहने वापस मिले

नीला बहन का फ्लेट का दरवाजा गलती से खुला रह गया था। उस समय ऊपर के फ्लेट में मिस्त्री का काम हो रहा था। ईंट ले जाते हुए एक मजदूर ने यह देखा। वह नीयत का अच्छा नहीं था। उसने यह मौके का फायदा उठाया और फ्लेट में घुस गया। नीला बहन स्नान करने बाथरूम में गई थी। फ्लेट में कोई न था। मजदूर

तेजी से सामान ऊपर–नीचे करने लगा। अचानक बाथरूम में गद्दे के नीचे से सोने का हार, मंगलसूत्र और दो कंगन मिल गये। गहने को जेब में सरका कर वह तेजी से बाहर निकला और फिर से ईंट लाने लगा। आधे–पौने घंटे बाद पेट में दर्द होने का बहाना निकाल कर वह भाग निकला।

शीला बहन को अच्छी कहो या बुरी, यही आदत थी कि रात को गहने निकाल कर गद्दे के नीचे रख देती और दूसरे दिन खाना बना कर पहन लेती। उनको तो ख्याल भी नहीं था कि गहने चोरी हो गये हैं। खाना बना कर उन्होंने हाथ साफ किये और गहने पहनने के लिए गद्दे के नीचे हाथ डाला तो कुछ नहीं मिला। उन्होंने तेजी से सब उलट–पुलट कर डाला पर गहने कहीं भी नहीं मिले। उन्होंने सारा बेडरूम छान मारा। पर कुछ नहीं मिला। वे तो जोर जोर से रोने लगी। रोने की आवाज सुन कर सब पड़ोसन दौड़ी आई और हकीकत सुन कर नीला बहन को सांत्वन देने लगी। उनका मायका पीछे की गली में ही था। कोई दौड़ कर वहां खबर दे आया। उनकी मां और बहन भी दौड़ती आई।

मां को देख कर नीला बहन फिर से सिसक–सिसक कर रोने लगी। मां ने कहा ! 'नीला पहने हुए गहने निकालने ही नहीं चाहिये। अगर निकाले तो अलमारी में रखने चाहिये। जो हुआ सो ... तू जानती है, मुझे 'धनलक्ष्मी मां' पर बहुत श्रद्धा है। उनका ग्यारह शुक्रवार **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करने की मन्नत ले। मां तेरी बिगड़ी सुधारेगी।

नीला बहन ने तुरन्त हाथ–पाँव धो कर ग्यारह शुक्रवार **'वैभवलक्ष्मी व्रत'**, करके ग्यारह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की पुस्तक उपहार में देने की मन्नत मानी और मन ही मन 'जय मां **लक्ष्मी**' का जप पूरे भाव से करने लगी।

थोड़ी देर में उनके पति घर पर आये। नीला बहन ने रोते–रोते

सब बात बताई। पति ने कहा, 'रोने से कुछ नहीं होगा। चल थाने में रिपोर्ट लिखवायें।

दोनों पति-पत्नी घर बंद करके थाने गये और पुलिस इन्स्पेक्टर को चोरी की बात बता कर रिपोर्ट लिखने की विनती की।

इन्स्पेक्टर रिपोर्ट लिखने लगा। 'नीला' बहन गहने की माहिती लिखवा रही थी कि पुलिस इंस्पेक्टर एक मजदूर को पकड़ कर वही थाने में आया और बोला :

'साब ! यह आदमी सुनार की दुकान के आगे टहल रहा था। मुझे शक हुआ और मैंने उसे पकड़ लिया। तो इसकी जेब में यह गहने निकल आये। और नीला बहन के ही चार गहने कास्टेबल ने इस्पेक्टर की टेबल पर रख दिये, जिसकी माहिती नीलाबहन इन्सपेक्टर को लिखवा रही थी।

इन्सपेक्टर भी विस्मित हो गया कि रिपोर्ट लिखते-लिखते ही चोर पकड़ा गया।

उस मजदूर ने गुनाह कबूल कर लिया और यह भी बताया कि उसने किस तरह और कहां से यह गहने चुराये थे। और नीला बहन को भी पहचान लिया। लिखापट्टी करके इन्स्पेक्टर ने गहने नीला बहन को सौंप दिये।

इस तरह धनलक्ष्मी मां की कृपा से चोरी हो गये गहने नीला बहन को तुरन्त वापस मिल गये। नीला बहन ने ग्यारह शुक्रवार **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करके ग्यारह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की पुस्तक भाव से बांटी और अपनी मन्नत पूरी की।

ऐसा है **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** का प्रभाव।

४. बिजनस अच्छा चलने लगा

भागीदारी में झगड़ा हुआ। बिजनैस का बटवारा हो गया। तभी से सुरेश के बुरे दिन शुरू हुए। वह दिन-रात मेहनत करता था । पर

वैभवलक्ष्मी व्रत २८

धंधा ठीक से नहीं चल रहा था। एक ही साल में वह टूट गया। उनकी पत्नी सरला बहुत सुशील थी। वह हिम्मत देती रहती। पर धंधा न चले तो आदमी का मन किस तरह प्रफुल्लित होगा ? सरला चोरी–छुपे से कुछ न कुछ बेच कर घर चलाती थी। पति मन से और तबियत से ढीला होता जाता था। यह देख कर उनका मन व्यथीत होता था।

एक बार उसकी मौसी मिलने आई। सरला को मौसी की साथ अच्छी पटथी थी। उसने मौंसो को सब कुछ बता दिया। और रो पड़ी।

मौंसी ने कहा, तू 'वैभवलक्ष्मी व्रत' की मन्नत ले और ग्यारह या इक्कीस शुक्रवार व्रत कर। अभी मेरे साथ बाजार चल और व्रत की पुस्तक खरीद ले। धनलक्ष्मी मां तेरे सब दुःख दूर करेगी।

तुरन्त तैयार हो कर सरला मौसी के साथ बाजार गई और साहित्य संगम की शास्त्रीय विधि वाली, श्रीयंत्र और माताजी के आठ स्वरूप वाली पुस्तक खरीद ली। दूसरे दिन शुक्रवार था। सरला विधिवत् इक्कीस शुक्रवार 'वैभवलक्ष्मी व्रत' की मन्नत मान कर व्रत करने लगी।

दूसरे शुक्रवार को सुरेश शाम को आया तब उसके चेहरे पर खुशी फूट रही थी। उसने कहा, 'सरला ! आज तो चमत्कार हो गया। एक बहुत बड़ी कंपनी को हमारे स्पेयर पार्ट्स की क्वालिटी और डिजायन जंच गई। उसने हमें बहुत बड़ा आर्डर दिया है। लगता है, हमारा नसीब बदल रहा है।

बात भी सच निकली। इक्कीस शुक्रवार पूरे होते ही सुरेश का बिजनस तेजी से बढ़ने लगा। पूरे भाव से सरला ने व्रत की उद्यापन विधि की और 'वैभवलक्ष्मी व्रत' का खरीदा हुआ पुस्तक तिजोरी में रख दिया।

एक ही साल में सुरेश ने मारूति कार खरीदी।

ऐसा है 'वैभवलक्ष्मी व्रत' का प्रभाव।

५. अच्छी नौकरी मिल गई

विमला बहन का पुत्र गजेश। एक. कॉम. में फर्स्ट क्लास आया। घर में खुशिया छा गई। दूसरे ही दिन में गजेश ने नौकरी की खोज शुरू कर दी। एम्पलॉयमेंट में नाम तो लिखा दिया था। घर वालों को लगता था कि इतने अच्छे मार्क्स हैं, नौकरी तो मिल ही जायेगी। खुद गजेश को भी ऐसा ही लगता था। किन्तु उसका अनुमान गलत निकला। गजेश के पास L.G.V.G. की डिग्री न थी। आप समझ गये न? लागवल की डिग्री। उसके कोई चाचा–मामा अच्छी पोस्ट पर न थे।

नौकरी ढूढते–ढूढते एक साल में गजेश थक सा गया। मध्यम कुटुंब में बेकार रहना जीते जी मरने बराबर था। घर में भी थोड़ी–थोड़ी चर्चा होने लगी।

गजेश की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाय !

एक दिन विमला बहन को पड़ोसन मीना बहन अपने घर बुला गई। उसने 'वैभवलक्ष्मी व्रत' किया था,उसकी उद्यापन विधि कर रही थी। मीना बहन ने सात बहनों को कुमकुम का तिलक कर के 'वैभवलक्ष्मी व्रत' की एक–एक पुस्तक दी और खीर का प्रसाद दिया। सब बहनों में आपस–आपस में 'वैभवलक्ष्मी व्रत' की महिमा की बातें हुई। थोड़ी ही देर में सब अपने–अपने घर चली गई।

विमला बहन भी 'वैभवलक्ष्मी व्रत' की किताब लेकर घर आई। घर का काम निपटा कर किताब देखने लगी। किताब में दिये 'श्रीयंत्र' देखते ही उन्होंने अपने मायके का वैभव याद आया। उनके पिताजी तिजोरी में 'श्रीयंत्र' रखते थे। वे कहते थे–'श्रीयंत्र' लक्ष्मीजी का तांत्रित स्वरूप है। जहां 'श्रीयंत्र' होगा, वहां अवश्य

लक्ष्मीजी का निवास होगा। विमला बहन ने भाव से **श्रीयंत्र** पर माथा टेका। बस! उनके मन में हलचल होने लगी। उनको **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करने की हृदय से प्रेरणा हुई।

उन्होंने किताब के आगे देखा तो लक्ष्मीजी के विविध स्वरूप थे। उन्होंने सब पर माथा टेका। तभी उनको याद आया कि उनकी मम्मी कहती थी, 'लक्ष्मीजी के विविध स्वरूपों के दर्शन करने से मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और वह घर में निवास करती है। उनके मायके में मां लक्ष्मीजी के विविध स्वरूप की छवियां थीं। मम्मी रोज उनकी पूजा करती थी।

विमला बहन ने **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करने का निर्णय किया।

उन्होंने पूरी किताब पढ़ कर व्रत की विधि समझ ली। तभी गजेश आया। विमला बहन ने किताब बता कर उसे भी व्रत करने की सलाह दी। गजेश को मां पर बहुत स्नेह था। वह मां की बात कभी भी टालता न था। उसने मां का मन रखने को हां कह दी।

शुक्रवार आते ही मा–बेटे ने साथ ही **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** ग्यारह शुक्रवार करने की मन्नत मानी और उसी शुक्रवार से व्रत करना शुरू किया।

शनिवार किया .... रविवार किया.... और सोमवार को गार्डन मिल में इन्टरव्यू का लेटर आया। मंगलवार को वह इन्टरव्यू के लिये गया। इन्टरव्यू अच्छा गया। शुक्रवार को एपाइन्टमेन्ट लेटर मिल गया। इस तरह गजेश को अच्छी नौकरी मिल गई।

घर में आनंद छा गया।

गजेश ने दुबारा इक्कीस शुक्रवार **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करने की मन्नत मानी। **'धनलक्ष्मी मा'** की दया से गजेश को प्रमोशन मिलता ही गया और तेजी से वह बड़े ओहदे पर आ गया।

इस तरह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** के प्रभाव से गजेश को अच्छी

६. सुख–समृद्धि मिले

मालती स्वभाव की सरल, होशियार, मृदुभाषी और कार्यनिपूण थी। फिर भी उन पर दुःख के पहाड़ टूट पड़े।

दो पुत्र हुए। फिर अचानक उनके पति को स्कूटर एक्सीडेन्ट हुआ। और उनके दो पांव कट गये। दाहिना हाथ भी क्षतिग्रस्त हो गया! समझो जान ही बच गई। घर की जवाबदारी मालती पर आ पड़ी। शादी को चार–पांच साल ही हुए थे। इसलिये बचत भी न थी। सिर्फ फ्लेट था.... अपना।

वह बहुत व्याकुल हो गई। किन्तु बाहर से पति को जरा सा भी लगने न दिया कि वह घबरा गई है। उसने पति को बहुत हिम्मत दी।

सुख में सुनार, दुःख में राम... यह कहावत अनुसार मालती को भगवान याद आये। ऐसे संकट से तो भगवान ही बचा सकते हैं। वह सोचने लगी कि मैं क्या करूं तो मुझे कुछ रास्ता मिले।

अचानक उनको याद आया कि उसकी सुशीभाभी कुछ तकलीफ आने पर बार–बार **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करती है और बार–बार उद्यापन करती है। वह यह व्रत की बहुत महिमा गाती है। एक उद्यापन में भाभी ने उसे भी बुलाया था और व्रत की पुस्तक दी थी।

व्रत की पुस्तक!

मालती ने अलमारी के एक कोने में रख छोड़ी थी। वह तुरन्त उठी और वह पुस्तक खोज निकाली। खोल कर उसमें छपे हुए श्रीयंत्र, लक्ष्मीजी के विविध स्वरूप की छवियां देखी। व्रत की विधि पढ़ी। व्रत की महिमा पढ़ी। उसे हुआ, मैं भी यह व्रत करूँ ? लक्ष्मी मां अवश्य रास्ता दिखायेंगी।

और उसने वहीं बैठे–बैठे ही ग्यारह शुक्रवार **'वैभवलक्ष्मी**

व्रत करने की मन्नत मानी और वहीं बैठे–बैठे ही उसने मन ही मन 'जय मां लक्ष्मी' का रटन शुरू कर दिया।

शुक्रवार होते ही उसने पूरे भाव से 'वैभवलक्ष्मी व्रत' शुरू किया।

पाँचवां शुक्रवार था। उस दिन मालती की सखी रीमा उसे मिलने आयी। वे दोनों कॉलेज में साथ–साथ पढ़ती थी। दोनों अपनी–अपनी बातें कर रही थीं। मालती की तकलीफें सुन कर रीमा ने कहा, 'मालती! तेरी तकलीफें दूर करने का एक रास्ता है। तू ब्यूटी–पार्लर शुरू कर। तूने ब्यूटी–पार्लर का कोर्स भी किया है और तू चित्रकारी भी अच्छी कर लेती है। तुझे तो यह सब कितना अच्छा आता है। तेरे फ्लेट में से एक रूम ब्यूटी–पार्लर के लिए खाली कर दे। हमारे पड़ोसी ब्यूटी–पार्लर का फर्नीचर–साध ; सब बेचने वाले हैं। क्योंकि वे फोरन जा रहे हैं। उन्हें जल्दी है। हमारा संबंध भी बहुत घरेलू है। मैं तुझे कम दाम में और हफ्ते से सब दिलबाऊगी। ठीक है !'

मालती को यह बात जच गई। उसने तुरन्त पति की अनुमति मांगी। पति को भी पत्नी घर में रह कर कुछ करे उसमें कोई एतराज न था। उन्होंने अनुमति दे दी। मालती ने रीमा को कहा, तू जल्दी ही मुझे ब्यूटी–पार्लर का सामान दिलवा दे। मुझे तेरी बात बहुत जंच गई है। काम भी होगा और पति–बच्चों का ख्याल भी रहेगा। सात दिन में ही मालती ने घर में ब्यूटी–पार्लर खोल दिया।

'धनलक्ष्मी मां' की कृपा से एक ही माह में उसका पार्लर अच्छा जम गया।

इस तरह 'वैभवलक्ष्मी व्रत' के प्रभाव से मालती को रास्ता मिल गया। एक ही साल में मालती ने बहुत से पैसे कमा लिए। उसमें से पड़ोस या फ्लेट खरीद कर उसमें एयरकन्डीशन्ड ब्युटी–पार्लर खोला।

ऐसी है 'वैभवलक्ष्मी व्रत' की महिमा

७. खोया हुआ बच्चा वापस मिला

हेमा के दो लड़के थे। उसमें से दो साल का छोटा बच्चा कुंभ मेले में खो गया। उसकी बहुत खोज की। पेपर में दिया। टी. वी पर दिया। गाँव–गाँव, शहर–शहर छान मारा। पर बच्चा नहीं मिला।

सारा घर शोकग्रस्त हो गया। मानो जीने का रस चला गया। रात–दिन हेमा रोया करती। उनके पति भी उदास से होकर हेमा को संभालने की कोशिश में लगे रहते। पति–पत्नी जैसे–तैसे समय व्यतीत करने लगे।

एक दिन वे लोग बड़े लड़के की पाठ्यपुस्तक खरीदने बाजार में गये। वहाँ पुस्तक विक्रेता की दुकान पर **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की किताब देखी। उसे देखते ही देखते चार–पाँच बहनें पुस्तक की सात–सात प्रतियां ले गई। हेमा और उसके पति को आश्चर्य हुआ। उन्होंने भी एक किताब खरीद ली और घर पर आये।

घर आ कर दंपति ने सारी किताब देखी–पढ़ी।

हेमा पति को कहने लगी। 'मैं भी यह व्रत करूंगी। मां तो दयालु हैं। दुनिया की रीत से सब कर देखा पर मेरा लाल नहीं मिला। अब माताजी ही हमारी आशा की ज्योत हैं। वे प्रसन्न होंगे तो जरूर मेरा बेटा मिल जायेगा। मैं पूरे भाव से माताजी को विनती करूंगी... मनाऊंगी !' कहते–कहते हेमा की आँखों में आँसू बहने लगे।

फिर हेमा ने हाथ–पांव धो कर मन्नंत मानी : हे धनलक्ष्मी माँ ! मैं आपका **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** इक्कीस शुक्रवार करूंगी। भाव से करूंगी। और आपकी १०१ किताबें बाटूँगी। पर माँ ! मुझे मेरे खोये हुए लाल से मिला दो। ऐसा संकल्प करके हेमा गिड़गिड़ाने लगी।

बच्चे के खो जाने पर दोनों पति–पत्नी जरूरत हो उतना ही बोलते। समझो, मौन ही रहते। अतः हेमा निरंतर **'जय माँ लक्ष्मी'** का रटन करने लगी।

३४ वैभवलक्ष्मी व्रत

शुक्रवार आते ही उसने पूरे भाव–भक्ति से 'वैभवलक्ष्मी व्रत' शास्त्रीय विधि से करने की शुरूआत की। घर में एक साल से कोई मीठी चीज आयी ही नहीं थी। पर शुक्रवार को थोड़ा गुड़ का शीरा बनाकर माताजी प्रसाद रखा।

व्रत करके वह 'जय माँ लक्ष्मी' का रटन करते–करते सो गई।

भोर होने से पहले हेमा को सपने में रंग–बिरंगी फव्वारे वाला बाग दिखाई दिया। वह बाग में उसका खोया हुआ बच्चा खेल रहा था। तुरन्त उसकी आँख खुल गई।

सवेरे उठते ही उसने स्नान करकें धूप–दीप किया और 'धनलक्ष्मी माँ' की छवि को लक्ष्मीजी के विविध स्वरूपों को और श्रीयंत्र को वंदन करके माथा टेका। फिर लक्ष्मी स्तवन किया। बाद में माताजी के सपने की बात कही। माताजी के मंदिर मे जाकर श्रीफल रखा और वहाँ भी सपने की बात कही। बाद मे घर, आकर पति को सपने की बात कही।

उसके पति ने कहा, 'तू जो बाग का वर्णन करती है, व मैसूर का वृंदावन गार्डन लगता है। मैं एक बार वहा गया था

तो चलो। हम वहीं जाकर मेरे लाड़ले को ढूंढेंगे। मेरा म कहता है, माताजी ने ही हमें सपने द्वारा संकेत दिया है।

पति ने स्वीकृति दी। बड़े बेटे को ननद के घर रखक हेमा पति के साथ उसी दिन मैसूर जाने के लिए निकल प मैसूर पहुँचते ही दोनों वृंदावन गार्डन में गये और व्याकुलता अपने बच्चे को ढूंढ़ने लगे। मन में 'जय मां लक्ष्मी' का रट चालू था और चमत्कार हुआ। सपने में हेमा ने जिस जगह बे को देखा [illegible] उसी जगह पर उसका बेटा उसके हमउम्र बच्चे साथ खेल [illegible] दोनों बच्चों के नजदीक एक दंपत्ति थे। वे चेहरे से [illegible] थे।

हेमा ने दौड़कर [illegible] गोद में उठा लिया और छाती चिपका कर रोने लगी। [illegible] घबराकर रोने लगा। वह मद्रा

दंपति भी स्तब्ध बनकर खड़े हो गये। हेमा के पति ने हेमा को सांत्वना देकर चुप कराया। फिर वह मद्रासी दंपति को बताया कि यह बच्चा उसका है, वह कहाँ खो गया था, उसे किस–किस रीत से ढूंढा और पेपर के कटिंग भी दिखाये।

मद्रासी दंपति ने भी कहा कि यह बच्चा वे लोग कुंभ स्नान करने गये थे तब ट्रेन में से मिला था। बच्चा ट्रेन में किस तरह आया उनको मालूम नहीं था। पर बच्चा बहुत रोता था। अतः वे लोग उसे अपने साथ मैसूर ले आये और अपने बच्चे की तरह पालते थे।

फिर जरूरी कार्यवाही करके, मद्रासी दंपति को बहुत–बहुत धन्यवाद देकर हेमा और उनका पति अपने बेटे को घर ले आये। घर में फिर सुख का सागर लहराने लगा।

हेमा हर शुक्रवार शाम को, कुछ न कुछ बनाकर माताजी को प्रसाद रखती। इस तरह इक्कीस शुक्रवार पूर्ण होते ही उसने भाव उद्यापन किया और एक सौ एक **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की किताबें बाँटी।

हेमा के पड़ोसी वगैरह सब माताजी के व्रत का यह चमत्कार देखकर दंग रह गये।

ऐसा है 'वैभवलक्ष्मी व्रत' का प्रभाव।

८. लड़की की शादी हुई

राधा बहन की सुनार जाति में ज्यादातर स्त्रियाँ गौरवर्ण की और रूपवान। पर राधा बहन की बेटी सोनाली थोडी श्याम थी। ऊपर से पति की स्थिति भी साधारण। बडा दहेज देने की शक्ति उसमें न थी। सोनाली ग्रेजुएट हो गई थी उसकी शादी नहीं हो रही थी।

३६ वैभवलक्ष्मी व्रत

धीरे–धीरे आयु बढ़ने लगी। अतः माता–पिता की चिंत
भी बढ़ने लगी। सोनाली खाना पकाने में और इतर प्रवृत्तियों
कुशल थी। स्वभाव से भी सयानी थी। पर शादी की बात
पीछे रह गई।

एक दिन सोनाली अपनी कॉलेज फ्रेन्ड हिना से मिल
गई तो हिना एक किताब पढ़ रही थी। सोनाली ने पूछा, 'हिन
क्या पढ़ रही है ?

'**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की किताब है। हमारी पड़ोसन लीनाबह
ने आज उद्यापन किया है तो सब को एक–एक किताब बाँ
थी।

'मुझे दिखा?'

हिना ने सोनाली को किताब दी। किताब पढ़ते–पढ़
सोनाली को हुआ, मैं भी यह व्रत करके देखूं। शायद मेरी शा
हो जाय।

सोनाली ने कहा, 'हिना, यह किताब मैं ले जाऊं ?

'क्यों ? व्रत करने का विचार है ?' हेमा ने हँस कर पूछ

हाँ! उमर बढ़ती जाती है, और दिल बैठ–सा जाता

तेरी बात सच्ची है। यह किताब तू ले जा।

शुक्रवार को सवेरे ११ शुक्रवार की मन्नत मानकर सोना
ने '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' करने का संकल्प किया और व्रत शु
किया।

उसी रात उनके फुफाजी एक लड़के की बात ले
आये। जाति में ख्यातनाम घराना.... धनवान... एम. एस. सी. प
था। सोनाली की फुफी ने सीधे लडके के साथ ही बात
कर सोनाली के गुण गाये थे। वह लड़का शांत स्वभाव की
होशियार लड़की के साथ शादी करने का इच्छुक था।
उसके व्यापार में हाथ बँटा सके।

सोनाली तो यह बात सुन कर खुश–खुश हो गई।

अगले शुक्रवार को ही सादगी से सोनाली की शादी
गई। ऐसी है '**माँ धनलक्ष्मी**' की कृपा '**वैभवलक्ष्मी व्रत**'
चमत्कार।

श्री महालक्ष्मी की स्तुति

महादेवी महालक्ष्मी नमस्ते त्वं विष्णु प्रिये।
शक्तिदायी महालक्ष्मी नमस्ते दुःख भंजनि ।१।
श्रैया प्राप्ति निमित्ताय महालक्ष्मी नमाम्यहम।
पतितो द्धारीणि देवी नमाम्यहं पुनः पुनः ।२।
वेदांस्त्वा संस्तुवन्ति ही शास्त्राणि चं मुर्हुमुः।
देवास्त्वां प्रणमन्तिही लक्ष्मीदेवी नमोऽस्तुते ।३।
नमस्ते महालक्ष्मी नमस्ते भवभंजनी।
भुक्तिमुक्ति न लभ्यते महादेवी त्वयि कृपा बिना ।४।
सुख सौभाग्यं न प्राप्नोंति पत्र लक्ष्मी नं विधते।
न तत्फलं समाप्नोति महालक्ष्मी नमाम्यहम ।५।
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहिमे परमं सुखम्।
नमस्ते आद्यशक्ति त्वं नमस्ते भीड़भंजनी ।६।
विधेहि देवी कल्याणं विधेहि परमां श्रियमं।
विधावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मवन्तं जनं कुरू ।७।
अचिन्त्य रूप—चरिते सर्वशत्रु चिनाशीनी।
नमस्तेतु महामाया सर्व सुख प्रदायिनी ।८।
नमाम्यहं महालक्ष्मी नमाम्यहम सुरेश्वरी।
नमाम्यहं जगद्धात्री नमाम्हं परमेश्वरी ।६।

साहित्य संगम के लिये
मुद्रक—प्रकाशक—जनकभाई मानुभाई नायक
मुद्रण स्थान : कुमकुम ओफसेट केलापीठ सूरत
प्रका. स्थान : साहित्य संगम. बावाशीदी गोपुपुरा. सूरत (गुजरात)

श्री लक्ष्मी महिमा

श्री वैभवलक्ष्मी व्रत में आरती करने के बाद यह श्लोक का पठन करने से शीघ्र फल मिलता है।

यत्राभ्यागदानमान चरण पक्षालनं भोजन।
सत्सेवा पितृदेववार्चन विधिः सत्यंगवां पालनम्।।
धान्या नामपि सग्रहो न कलहशिचत्ता तृरूपा प्रिया।
दृष्टा प्रहा हरि वसामि कमला तस्मिन् गृहे निष्फला।।

भावार्थ

जहाँ मेहमान की आव–भगत करने में आती है...उनको भोजन कराया जाता है, जहाँ सज्जनों की सेवा की जाती है,जहाँ निरंतर भाव से भगवान की पूजा और अन्य धर्मकार्य किये जाते हैं,जहाँ सत्य का पालन किया जाता है, जहाँ गलत कार्य नहीं होते, जहाँ गायों की रक्षा होती है, जहाँ दान देने के लिये धान्य का संग्रह किया जाता है,जहाँ क्लेश नहीं होता, जहाँ पत्नी संतोषी और विनयी होती है, ऐसी जगह पर मैं सदा निश्चल रहती हूँ। इनके सिवा की जगह पर कंभी कभार दृष्टि डालती हूँ।

आरती भगवती महालक्ष्मी जी की

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत, हर विष्णु विधाता।। ओ३म्...
उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग–माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।। ओ३म्....
दुर्गा रुप निरंजनि, सुख–संम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि–सिद्धि पाता।। ओ३म्।।....
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म–प्रभाव– प्रकाशिनि, भव निधि की त्राता।। ओ३म्....
जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता।। ओ३म्....
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता।
खान–पान का वैभव, सब तुमसे आता।। ओ३म्....
शुभगुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि–जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।। ओ३म्....
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता।। ओ३म्....
बोलो भगवती महालक्ष्मी की जय।

श्लोक

विष्णुप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्धते।
आर्त हंत्रि नमस्तुभ्यं समृद्धं कुरू मे सदा।।
नमो नमस्ते महामाय श्री पीठे सुर पूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते मह्यां लक्ष्मि नमोस्तुते।।

श्री महालक्ष्मी यंत्र



यह महालक्ष्मी यंत्र के नित्य दर्शन करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।